Rs. 5/-

Readers' Club Bulletin

पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 18, No. 4, April 2013

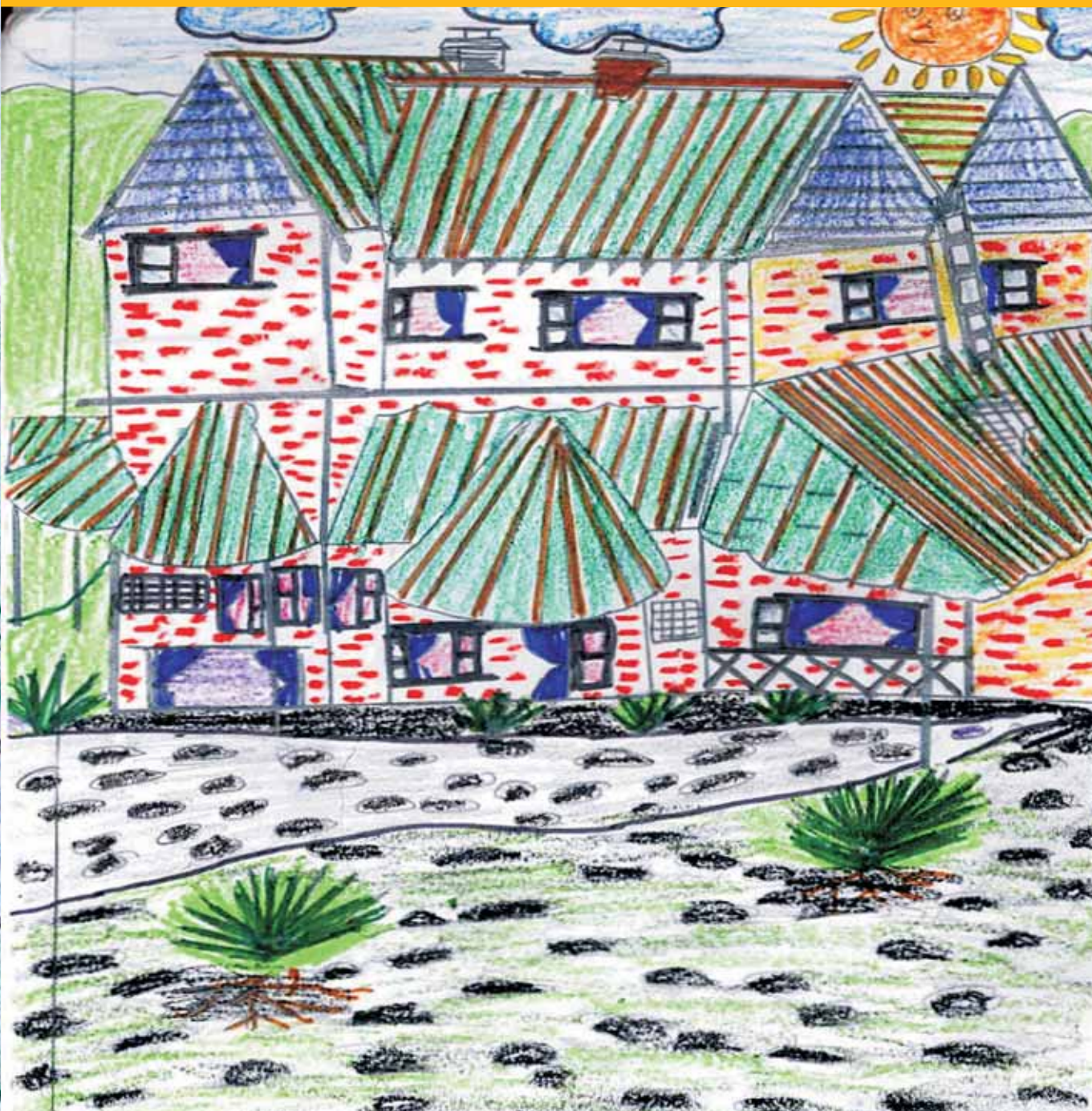

Readers' Club Bulletin
पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 18, No. 4, April 2013 **वर्ष 18, अंक 4, अप्रैल 2013**

Editor / संपादक
Manas Ranjan Mahapatra
मानस रंजन महापात्र

Assistant Editor / सहायक संपादक
Dwijendra Kumar
द्विजेन्द्र कुमार

Deepak Kumar Gupta
दीपक कुमार गुप्ता

Production / उत्पादन
Narender Kumar
नरेन्द्र कुमार

Printed and published by Mr. Satish Kumar, Joint Director (Production), National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase-II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

Printed at Pushpak Press Pvt. Ltd. 203-204, DSIDC Shed, Ph-I Okhla Ind. Area, New Delhi.

Typeset at Nath Graphics, 1/21, Sarvapriya Vihar, New Delhi.

Contents/सूची

पंछी का बसेरा	डॉ. अमिताभ शंकर रायचौधरी	2
टूटा पंख	बैलिंदर धनोआ	4
कैसे बनी तोबा झील	प्रीता व्यास	10
The Mouse and The Buffalo	Usha Iyengar	14
Above the Clouds	Anvita Abbi	16
Tarzan	Choisang Tamang	19
The Princess and the Swans	Anju Minz	20
महल का भूत	नामग्याल दोरजी	22
कहानी पांडा की	अदित अनेजर	23
Die for Metal	Saheeb Ansari	24

Cover Art: Sikkim's Royal Palace
Illustrators: Dharna Subba & Zongmit Lepcha

Editorial Address / **संपादकीय पता**
National Centre for Children's Literature, National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase - II, Vasant Kunj, New Delhi-110070
राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेस–II, वसंत कुंज, नई दिल्ली–110 070
E-Mail (ई–मेल) : nbtindia@ndb.vsnl.net.in

Per Copy / एक प्रति Rs. 5.00 Annual subscription / वार्षिक ग्राहकी : **Rs. 50.00**
Please send your subscription in favour of **National Book Trust, India.**
कृपया भुगतान **नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के** नाम भेजें।
This Bulletin is meant for free distribution to Readers' Clubs associated with National Centre for Children's Literature.
यह बुलेटिन राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र से जुड़े पाठक मंचों को निःशुल्क वितरित किया जाता है।

विश्व पुस्तक और कॉपीराइट दिवस

प्रत्येक वर्ष 23 अप्रैल को विश्व भर में विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस मनाया जाता है। यूनेस्को द्वारा आयोजित इस दिवस का उद्देश्य पठन एवं प्रकाशन को प्रोत्साहित करना एवं बौद्धिक संपदा को कॉपीराइट के द्वारा संरक्षा प्रदान करना है।

विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस सन् 1995 से प्रति वर्ष मनाया जाता है। दरअसल, 23 अप्रैल को विश्व की अनेक महान साहित्यिक हस्तियों के जन्म या पुण्य तिथि पड़ते हैं। इनमें शामिल हैं: मिगुएल दे सरवांतेज, मॉरिस द्रुओं, इन्का गार्सिलासो दे ला वेगा, हाल्दर किलजान लैक्सनेस, मैनुएल मेजिआ वलेजो, व्लादीमीर नाबोकोव, जोसेप प्ला तथा विलियम शेक्सपियर। पूरे विश्व में पठन को प्रोन्नत एवं प्रोत्साहित करने तथा पुस्तकों से जुड़े अनेक सांस्कृतिक आयामों को समेटते कार्यक्रमों एवं गतिविधियों की वर्ष भर धूम रहेगी । इनमें से अनेक कार्यक्रम देशों के बीच अंतरराष्ट्रीय सहयोग या मैत्री पर बल प्रदान करने के उद्देश्य से होंगे।

पूरे विश्व के किसी एक शहर को विश्व पुस्तक राजधानी घोषित करने के उद्देश्य से यूनेस्को प्रति वर्ष विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन संगठन, अंतरराष्ट्रीय पुस्तक विक्रेता संघ तथा पुस्तकालय संगठन एवं संस्थाओं के अंतरराष्ट्रीय संघ के प्रतिनिधियों की एक संयुक्त बैठक का आयोजन करता है।

वर्तमान विश्व पुस्तक राजधानी आर्मेनिया का शहर येरेवान है । नाइजीरिया का शहर पोर्ट हार्कोर्ट 23 अप्रैल, 2013 से 22 अप्रैल, 2014 तक विश्व पुस्तक राजधानी रहेगा। भारत के राजधानी शहर दिल्ली को वर्ष 2003 में विश्व पुस्तक राजधानी होने का गौरव प्राप्त हुआ था।

Festival of Reading at Gangtok

As part of the NBT-Sikkim Book Fair (15-20 March 2013) organised in collaboration with Sikkim Akademi, a 3-day Festival of Reading was held at Hotel Rendezvous, Gangtok from 18-20 March 2013. The Festival included a Children's Cretive Writing and Illustration Workshop, a Poets' Meet, several Storytelling Sessions and a Panel Discussion on Children's Literature.

The Festival was inaugurated by Mrs. Kunta Pradhan, eminent social activist and President, Centre for Peoples' Empowerment and Develop-ment. Dr. Kabita Lama, Ms. Ruchi Singh and Mrs. Sangmu Lepcha acted as resource persons for the workshop.

This issue carries a few writings developed in the workshop together with a few folktales popular across the world.

धारावाहिक 'सात समुंदर'

पंछी का बसेरा

डॉ. अमिताभ शंकर रायचौधरी
चित्र : स्वीटी

श्री हरिपदम, छोटा–सा गाँव। छोटी–सी नदी पंपा के किनारे बसा हुआ। हरे–भरे केरल के केले के बगीचे, नारियल और ताड़ के घने पेड़ों के बीच इंसान की दृष्टि ऐसे उलझकर रह जाती है कि इसका पता–ठिकाना ही किसी को मालूम नहीं पड़ता।

केरल को कहा जाता है देवभूमि, देवताओं का सबसे पसंदीदा स्थान। इसकी निराली हरियाली को देखकर लगता है कि यहीं कहीं बसा होगा देवताओं का नंदनकानन, स्वर्ण का नंदनवन।

केरल का मुख्य उत्सव है ओणम। कहते हैं कि जब भगवान श्री विष्णु ने वामनावतार का रूप धारण कर यहाँ के राजा महाबली से भिक्षा के रूप में स्वर्ग एवं मर्त्य माँग लेने के लिए धरती पर आविर्भूत हुए तो उनका दाहिना पैर इसी गाँव में पड़ा था। इसी से इसका नाम पड़ा श्री हरिपदम। भगवान विष्णु के चरण से इस गाँव की नींव रखी गई।

श्री शशिशेखर नारायणन इसी गाँव के हाईस्कूल के हेडमास्टर थे। सभी इनकी इज्जत करते हैं। गाँव के पढ़े–लिखे लोगों में आधे से ज्यादा इन्हीं के छात्र थे। प्रायः प्रतिदिन सुबह उठकर हाथ–मुँह धोकर निकल जाते थे पंपा की ओर। नदी में नहाकर सूर्य प्रणाम करते थे, फिर घर आकर पूजा–पाठ, यही उनकी प्रतिदिन की दिनचर्या थी।

ऐसे ही एक दिन छोटी गायत्री उनके साथ सुबह–सुबह नदी तक चली गई। उसके अप्पुपन ने तो धोती–कुर्ता उतारकर नदी में छलाँग लगा ली, वह किनारे बैठकर बेबात ही डर रही थी।

नारायणन हँसने लगे–"चल, तू भी चली आ–आ।" गायत्री तो ऐसे ही डर रही थी, पानी में उतरने से कतराती रही – "न, ना दद्दू, आज नहीं कल...।"

"अरे डरेगी तो आगे बढ़ेगी कैसे?" नारायणन तैरते हुए किनारे पर उसके पास पहुँचकर बोले।

यह बात तो उस दिन वहीं खत्म हो गई, परंतु आगे तो कुछ और ही होना था।

नारायणन घर पहुँचकर अपनी पोती पर हँसने लगे। "अरे, मेरी कुचुमोल होकर गायत्री इतनी डरती है!"

गायत्री का पिता मणिशंकर सुबह–सुबह उठकर हाथ में कॉफी की प्याली लिये बैठा था, बल्कि उसी ने कहा – "अच्चन, इसे भी तैराकी सिखा दीजिए, आप तो रोज पंपा में जाते ही हैं।"

मणि को घर से कुछ जल्दी निकल जाना पड़ता है। नदी पर फेरी पार करके तब वह कहीं

पहुँच पाता है कोट्टयम में, जहाँ उसका ऑफिस है । घर वापस आते–आते शाम हो जाती है।

गायत्री की माँ अनंती ही घर सँभालती है। घर की देखभाल करना, सब्जी खरीदना, बिजली का बिल ससुर से जमा करवा देना – ये सब तो है ही, साथ में रसोई का काम देखना, बाबूजी की पूजा के लिए सब कुछ ठीकठाक करना, सास की सेवा और सभी कुछ। इधर बेचारी कुछ परेशान थी। गायत्री का छोटा भाई माँ को बिलकुल छोड़ना ही नहीं चाहता। आँगन में बैठाकर जाओ तो घुटने के बल सीधे पहुँच जाता है रसोई घर में। कौन हर समय उस पर नजर रखे ?

गायत्री की दादी चिल्लाने लगती– "अरे बहू, राजन को जरा संभालना। कहीं गरम कॉफी–वॉफी उस पर गिर गई तो!"

दादी को तो पोते के लिए चिंता होगी

ही। परंतु अनंती बेचारी झुँझला उठती है। वह भी आवाज देती– "अरे गायत्री, जरा भाई को सँभाल नहीं सकती!"

"आई अम्मा!" दौड़ती हुई बेचारी पढ़ाई छोड़कर भागती हुई आई और उसे सँभालने लगी – "अले–ले–ले–मेरा भैया–खेवे नैया!"

वैसे अनंती की सास भी घर के कामकाज में कुछ हाथ तो बँटाती ही है, परंतु बेचारी अपने घुटने के दर्द से परेशान रहती है।

मणि ने कई बार कहा– "चलो माँ, तिरूवनंतपुरम के आयुर्वेद उपचार केंद्र में ले चलते हैं।" पर वह टाल जाती– "अरे बाबा नहीं, भगवान पदमनाभम ने चाहा तो मैं ऐसे ही उनके बैकुंठ में पहुँच जाऊँगी। मुझे नहीं पड़ना इन इलाजों के चक्कर में!"

नारायणन भी चुटकी लेते, "हाँ, स्वयं भगवान विष्णु अपनी अनंत शय्या से उठकर तुम्हारी आवभगत करेंगे– 'अरे, आओ, आओ मिसेस नारायणन! तुमने यहाँ तक पहुँचने में कितनी तकलीफ की!"

सभी हँसने लगे।

बस ऐसे ही दादा–दादी की गोद में हँसते–खेलते हुए वह पल–बढ़ रही थी।

(क्रमश :)

सी, 26/35–40 ए, रामकटोरा
वाराणसी–221001, (उ.प्र.)

कोरिया की लोककथा

टूटा पंख

बैलिंदर धनोआ
चित्र : पौलिन धनोआ

एक समय की बात है। एक बूढ़े के तीन बेटे थे। उसके बड़े बेटे कुरूप और आलसी थे। पर सबसे छोटा बेटा बड़ा रूपवान, भला और मेहनती था। उसका नाम इल–चुंग था। असल में इल–चुंग मेहनत करने से सूखकर काँटा हो गया था। बूढ़ा बाप अपने तीनों बेटों में से इल–चुंग को ही सबसे ज्यादा प्यार करता था। इससे इल–चुंग के बड़े भाई उससे चिढ़ते और ईर्ष्या करते थे।

अचानक एक दिन बूढ़े की मृत्यु हो गई। अब इल–चुंग अपने दोनों दुष्ट भाइयों के आश्रय पर रह गया। पिता की मृत्यु से बेचारे इल–चुंग को इतना धक्का लगा कि वह फूट–फूटकर रोने लगा।

इस पर उसके सबसे बड़े भाई टोंग–टोंगी ने चिढ़कर कहा, "अब यह झूठ–मूठ का रोना–धोना बंद कर!"

इल–चुंग के दूसरे भाई साल–सारी ने भी बड़े भाई की हाँ–में–हाँ मिलाते हुए कहा, "हाँ–हाँ, झूठ–मूठ का रोना–धोना बंद कर...।"

साल–सारी निपट बुद्धू था । उसके दिमाग में भूसा भरा था। इसलिए हमेशा अपने बड़े भाई की हाँ–में–हाँ मिलाता था।

टोंग–टोंगी ने फिर अधीर होकर इल–चुंग से कहा, "मैं अब और ज्यादा तेरी रोनी सूरत नहीं देख सकता ! समझे...!"

"मैं अब और ज्यादा..." साल–साली ने भी टोंग–टोंगी की हाँ–में–हाँ मिलाते हुए कहा। पर पूरी बात वह कह भी नहीं पाया था कि टोंग–टोंगी ने इल–चुंग को गर्दन से पकड़ा और घर से निकाल बाहर किया। फिर सूखी रोटी का एक टुकड़ा निकालकर उसके मुँह पर मारा और कहा, "ले जा यह रोटी का टुकड़ा और दफा हो जा! बाप की जायदाद में से, बस यही तेरा हिस्सा है।"

फिर दोनों बड़े भाइयों ने एक–दूसरे का हाथ पकड़ा और घर के भीतर चले गए और अपने छोटे भाई इल–चुंग की दुर्दशा पर बैठे खीसें निपोरते रहे।

इल–चुंग भली–भांति जानता था कि उसके दोनों भाई दुष्ट और द्वेषी हैं। इसलिए उनसे दया की भीख माँगना व्यर्थ था। बस, इल–चुंग वहाँ से उठा और निकट के एक जंगल में चला गया। समझदार तो था ही, जंगल से वह कुछ लकड़ियाँ और थोड़ा घास–फूस बटोर लाया । इस तरह उसने सिर छिपाने के लिए एक कुटिया बना ली और जल्दी ही उसकी चारदीवारी और छत मज़बूत कर ली।

इल–चुंग असल में हमेशा खुश रहता था और विपदा में भी मुस्कुराना जानता था। इसलिए कुछ समय तक वह जिस किसी तरह निर्वाह करता

रहा। जंगल से कंद–मूल बटोरकर उन्हीं से पेट भरता। परंतु जाड़ा निकट आ रहा था और वह जानता था कि जंगल में इस छोटी–सी कुटिया में जाड़ा बिताना बड़ा कठिन होगा।

एक दिन उसे बड़ी भूख लगी। बेर बटोरते हुए वह जंगल में भटक रहा था। तीसरा पहर चढ़ आया। तब तक वह मुट्ठी–भर बेर ही जुटा पाया था जो उसकी भूख मिटाने के लिए पर्याप्त नहीं थे। हाथ में बेर लिये वह बड़ा उदास–उदास अपनी कुटिया की ओर चल पड़ा।

अचानक रास्ते में उसे एक घायल चिड़िया पड़ी मिली।

इल–चुंग ने झुककर चिड़िया की तरफ हाथ बढ़ाया ही था कि चिड़िया छटपटाते हुए पंख फड़फड़ाने लग गई, जैसे एकदम डर गई हो कि लड़का उसका अनिष्ट करने आया है। परंतु इल–चुंग दयापूर्वक धीरे–धीरे उसके सिर पर हाथ फेरते हुए पुचकारने लगा। जब उसने ध्यान से देखा तो पाया कि चिड़िया का एक डैना टूटा हुआ था।

इल–चुंग तुरंत घायल चिड़िया को उठाकर अपनी कुटिया में ले आया। वहाँ एक कोने पर उसने घास–फूस से कोमल गुदगुदा–सा बिस्तर बनाया और उस पर चिड़िया को रख दिया। अपने सारे बेर भी उसने चिड़िया को खिला दिए।

इसके बाद इल–चुंग ने घायल चिड़िया की इतनी सेवा की कि वह जल्दी ठीक होने लग गई और एक दिन सुबह–सवेरे ही उड़ गई। यह देखकर इल–चुंग उदास हो गया, क्योंकि सारे जंगल में केवल यही चिड़िया उसकी साथी थी और इल–चुंग को उससे बड़ा स्नेह हो गया था।

परंतु अगले दिन सुबह–सवेरे ही इल–चुंग को किसी पक्षी की चहचहाहट सुनाई पड़ी। स्वर जाना–पहचाना था। वह लपककर बाहर आया तो

क्या देखता है कि वही चिड़िया आकर बैठी है।

चिड़िया की चोंच में एक नन्हा–सा बीज था। चिड़िया ने बीज इल–चुंग के पैरों पर गिराते हुए कहा, "तुमने दया करके इतने दिनों तक मेरी सेवा की। तुम्हें धन्यवाद देने आई हूँ। लो, यह छोटा–सा बीज, इसे कहीं बो दो। तुम्हारा भाग्य चमक उठेगा।"

इल–चुंग कुछ कहे कि इससे पहले ही चिड़िया फुर्र से उड़ गई। उसने वह बीज उठाया और अपनी कुटिया के बाहर बो दिया।

अगले दिन जब इल–चुंग की नींद खुली, तो क्या देखता है कि कुटिया में अंधेरा–अंधेरा–सा है पहले तो उसे भ्रम हुआ कि शायद आज बहुत जल्दी नींद खुल गई । फिर बिस्तर छोड़कर वह खड़ा हो गया – यह देखने के लिए कि सूरज निकला है या नहीं। जब कुटिया के दरवाजे में से झाँकने के लिए उसने बाहर सिर निकालना चाहा, तो एक बहुत ही कोमल पत्ता उसके मुख पर सरसराया। उसे हटाकर वह बाहर निकला, तो क्या देखता है कि चारों ओर अनगिनत हरे पत्ते फैले हुए हैं। उसने दोनों हाथों से पत्तों को हटाया,

पर पत्ते इतने घने थे कि उसके मुँह–सिर पर गुदगुदी करते प्रतीत होते थे। इल–चुंग एकाएक विस्मित होकर चिल्लाया, "अरे, यह तो कुम्हड़े (पेठे) की बेल है।"

इतनी बड़ी बेल उसने पहले कभी नहीं देखी थी। सारी कुटिया के ऊपर और उसके आस–पास यह बेल फैल गई थी। जहाँ तक दृष्टि जाती थी, बेल के पत्ते ही दिखाई पड़ते थे। पत्तों के बीच न जाने कितने रसीले कुम्हड़े चमक रहे थे।

इल–चुंग नहीं समाया, खुशी तो उसे इस बात की थी कि अब पेट भरने के लिए उसे जंगल–जंगल भटकना नहीं पड़ेगा। उसने एक कुम्हड़ा तोड़ा और उठाकर कुटिया के भीतर ले आया।

ज्योंही इल–चुंग ने कुम्हड़े को काटा, कुम्हड़े के भीतर से जैसे प्रकाश फूट पड़ता था। फिर जब उसने कुम्हड़े को काटकर उसके दो हिस्से किए तो उसमें से झनझन करती सोने की मुहरें बिखर गई। इल–चुंग अचरज से आँखें फाड़े देखता रह गया। कुम्हड़े में सोने की मुहरें। और बाहर ढेरों कुम्हड़े बेल में लगे थे। क्या सबमें ऐसी ही मुहरें हैं?

इल–चुंग का मन बल्लियों उछलने लगा। फिर उसने दो बड़े–बड़े कुम्हड़े तोड़े और भागा–भागा अपने भाइयों के घर पहुँचा। हालांकि दोनों भाइयों ने उसके साथ बड़ी नीचता और निर्दयता का व्यवहार किया था, फिर भी वह यह खुशी अपने भाइयों में ही बाँटना चाहता था।

पर जब इल–चुंग हाथों में कुम्हड़े उठाए अपने भाइयों के द्वार पर पहुँचा, तो टोंग–टोंगी और साल–सारी लंबी ताने खर्राटे भर रहे थे।

दोनों कुम्हड़े उसने एक चौकी पर रख दिए। फिर जैसे चहकते हुए बोला, ''उठो देखो, मैं तुम्हारे लिए क्या उपहार लाया हूँ।''

टोंग–टोंगी ने जरा आँख खोलकर देखा। कुम्हड़ों पर नजर पड़ते ही उसकी भवें तन गई। अपने छोटे भाई को डाँटकर बोला, ''नालायक! यह कुम्हड़े...।''

टोंग–टोंगी ने इल–चुंग से कहा, ''ले जाओ अपने कुम्हड़े। हमें नहीं चाहिए। हमारे खेतों मे ढेरों कुम्हड़े लगते हैं...।''

इस पर घोंघा बसंत साल–सारी ने भी अपने बड़े भाई की हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा, ''ले जा अपने कुम्हड़े....'' वह बिल्कुल वही बात बोलना चाहता था जो टोंग–टोंगी ने कही थी। पर बोलते–बोलते गड़बड़ा गया। इतनी अकल जो नहीं थी उसमें।

इल–चुंग ने अपने बड़े भाई टोंगटोंगी से कहा, ''भइया! ये कोई मामूली कुम्हड़े नहीं है। उठकर देखो तो सही...'' और यह कहने के साथ ही उसने एक कुम्हड़े को काटा और खनखनाती हुई सोने की मुहरें लुढ़कने लगीं।

टोंग–टोंगी और साल–सारी ने सोने की मुहरें देखीं, तो इकट्ठा करने के लिए एकदम ऐसी फुरती दिखाई जैसी जीवन भर देखने में नहीं आयी थी। देखते ही देखते उन्होंने दूसरा कुम्हड़ा भी काट डाला। सोने की मुहरों का ढेर लग गया। इतनी मुहरें देखकर वे खुशी से नाच उठे और उछल–उछलकर कहने लगे, ''अब काम करने की क्या जरूरत है। मजे से बैठकर खाएँगे, नाचेंगे कूदेंगे...।''

तब इल–चुंग ने उन्हें जंगल में पड़ी एक घायल चिड़िया की सारी बात बताई।

सारी बात सुनकर दोनों भाई ईर्ष्या से जल उठे। टोंग–टोंगी सिर खुजलाते हुए कुछ सोच रहा था। इल–चुंग चुपचाप खड़ा था। इस पर टोंग–टोंगी ने एकदम उसे धक्का मारा और डपटकर कहा, ''चल भाग यहाँ से। दफा हो जा। हमारे घर में तेरी कोई जगह नहीं।''

बेचारा इल–चुंग अपना–सा मुँह लेकर लौट पड़ा। वह इस आस से अपने भाइयों के पास गया था कि वे उसे गले लगाएँगे। पर दोनों भाइयों ने उसे दुत्कार कर निकाल दिया था।

इल–चुंग ने साल–सारी को पुकारा, ''साल–सारी।''

परंतु उत्तर न पाकर टोंग–टोंगी गुस्से से चिल्ला पड़ा, ''साल–सारी! कहाँ मर गया रे।''

तभी नीचे जमीन पर उसे धीमी घुरघुराहट–सी सुनाई पड़ी। टोंग–टोंगी ने देखा तो उसका आलसी भाई सोने की मोहरों में सर छिपाए ऊँघ रहा था।

बस, टोंग–टोंगी ने गुस्से में भरकर उसे लात मारी। साल–सारी छटपटाकर उठ खड़ा हुआ।

टोंग–टोंगी ने कहा, "अरे, घोंघा बसंत ! मेरी बात ज़रा ध्यान से सुन।"

साल–सारी जैसे घुरघुराकर बोला– "बोल!"

टोंग–टोंगी ने आदेश भरे स्वर में कहा, "थोड़ा नीचे झुककर मेरी बात सुन।"

टोंग–टोंगी मोटा और ठिंगना था। साल–सारी लंबा और दुबला–पतला। वह अकसर कहता था कि टोंग–टोंगी जो बात करता है, वह उसके पल्ले ही नहीं पड़ती, क्योंकि वह इतनी दूर से बोलता था।

जब टोंग–टोंगी ने उससे झुककर सुनने को कहा तो साल–सारी जैसे हाथ बाँधे गुलाम की तरह झुक गया। पर ज्योंही वह झुका कि टोंग–टोंगी ने उसकी नाक पर चुटकी ली। इस पर भी साल–सारी ने चूँ तक नहीं की, क्योंकि टोंग–टोंगी अकसर ऐसा किया करता था। और साल–सारी भी इसका आदी हो गया था। अब असली बात यह थी कि टोंग–टोंगी और साल–सारी में से टोंग–टोंगी में ही थोड़ी–बहुत अक्ल थी। साल–सारी को दिमाग लगाने में बड़ी तकलीफ होती थी, इसलिए वह अपने दिमाग से कोई काम नहीं लेता था और हमेशा टोंग–टोंगी की हाँ–में–हाँ मिलाता था। पर टोंग–टोंगी अकसर उसकी नाक पर घूँसा जड़ देता था। इस सबके बावजूद, दोनों भाइयों में खूब पटती थी।

अब टोंग–टोंगी ने अपने मूर्ख भाई को आदेश दिया, "जा, जंगल में कोई घायल चिड़िया पकड़कर ला।" फिर धमकाते हुए बोला, "और ध्यान से सुन। यदि तू खाली हाथ लौटा तो तेरी वह दुर्गति करूँगा कि..."

साल–सारी अपने भाई का आदेश पालन करने निकल पड़ा। पीछे टोंग–टोंगी बैठकर सोने की मुहरें गिनने लगा ।

तलाश करते–करते साँझ घिर आई। पर साल–सारी को टूटे पंख वाली कोई चिड़िया नहीं मिली। यह सोच–सोचकर वह घबराया कि यदि खाली हाथ लौटता है तो भाई घूँसे मार–मारकर उसकी नाक तोड़ देगा। बस, इसी डर से उसकी आँखों से पानी बह निकला और नाक भी दर्द करने लगी।

आखिर, उसे एक उपाय सूझा। झपटकर उसने एक चिड़िया को पकड़ा और उसका पंख तोड़कर वह घर की ओर ऐसे दौड़ा जैसे कोई मैदान मार लाया हो। घर आकर उसने अपने भाई को सारी बात बताई कि यह चिड़िया उसने किस तरह पकड़ी। और किस तरह अपने हाथ से पंख तोड़ा। यह सब बताकर वह खीसें निपोरते हुए बोला, "भइया, अब ऐसा करते हैं कि इसका दूसरा पंख भी तोड़ देते हैं...।"

यह बात उसके मुँह में ही थी कि टोंग–टोंगी ने खींचकर एक घूँसा उसकी नाक पर जमाया। घूँसा मारने के लिए उसे ऊपर तक उछलना पड़ा और जब वह उछला तो जानते हो क्या हुआ! उसका पेट देर तक हिचकोले खाता रहा।

खैर! दोनों भाइयों ने घायल चिड़िया का

इलाज शुरू किया। उन्होंने उसे जड़ी–बूटी और बेर तो खिलाए, पर वे उसे कोसते और फटकारते रहे कि वह ठीक होने में इतनी देर क्यों लगा रही है।

आखिर, चिड़िया उड़ने लायक हुई और एक दिन अपने आप पंख फैलाकर उड़ भी गई। यह देखकर दोनों भाइयों की खुशी का ठिकाना न रहा। अगले ही दिन चिड़िया चोंच में एक बीज लेकर आई और टोंग–टोंगी के पैरों पर डालकर उड़ गई ।

दोनों भाइयों ने बड़ी होशियारी से बीज बोया। बीजक बोकर वे लेट गए। पर सारी रात उनकी आँखें में नींद नहीं थी। यही सोच–सोचकर करवटें बदलते रहे कि कैसी बेल निकलती है और फिर कितनी मुहरें मिलती हैं।

अगले दिन उठकर उन्होंने देखा तो उछल पड़े। घर के बाहर सचमुच, बहुत बड़ी बेल उग आई थी। इतनी बड़ी बेल उन्होंने पहले कभी नहीं देखी थी।

बस, जल्दी–जल्दी वे कुम्हड़े एकत्र करने लगे। जब सारा घर कुम्हड़ों से भर गया तो एक बड़ा–सा छुरा लेकर उन्होंने एक कुम्हड़ा काटा।

जानते हो क्या हुआ!

कुम्हड़े के कटने की देर थी कि उसके भीतर से सोने की चमचमाती मुहरों की जगह चिपचिपे साँप, छिपकलियाँ और मेंढ़क निकल पड़े। यह भयानक, दृश्य देखकर दोनों भाई थर–थर काँपने लगे। किसी तरह उस कुम्हड़े को उठाकर उन्होंने बाहर फेंका और दूसरा कुम्हड़ा काटा। पर उसमें

से भी वैसे ही साँप, छिपकलियाँ और मेंढ़क निकले। इसके बाद उन्होंने जो भी कुम्हड़ा काटा, सबमें से वही साँप, छिपकलियाँ और मेंढ़क निकले।

सारे घर में साँप रेंग रहे थे। जब वे उनकी टाँगों से लिपटने लगे तो दोनों भाई चीखते हुए भागे और जंगल में पहुँचे । पर साँपों ने वहाँ भी उनका पीछा नहीं छोड़ा ।

वहाँ से भागते हुए दोनों भाई शायद उस देश से भी भाग गए, क्योंकि उसके बाद किसी ने उनकी शक्ल नहीं देखी।

(नेशनल बुक ट्रस्ट की पुस्तक *'टूटा पंख और अन्य कहानियाँ'* से)

इंडोनेशिया की लोककथा

कैसे बनी तोबा झील

प्रीता व्यास
चित्र : इरसाद कप्तान

बहुत पुरानी बात है। उत्तरी सुमात्रा में एक छोटी–सी झील के पास एक गरीब किसान रहता था। सारे दिन वह खेतों में काम करता था। कभी–कभी जंगल जाकर लकड़ियाँ भी काटता था, जिनमें से वह अपने लिए रख लेता था और कुछ शेष बेच देता था। जो पैसा मिलता, उससे वह नमक, सूखी मछली, तेल आदि जरूरत का सामान खरीदता था। यदि इसके बाद भी कुछ पैसा बच जाए तो अपने लिए कपड़े या टोपी आदि खरीद लेता था।

वह बड़ा मेहनती था। भोर से ही उठकर काम में लग जाता था। अपनी आदत के अनुसार एक दिन वह सुबह जागा तो उसने देखा कि चूल्हा सुलगाने के लिए लकड़ियाँ नहीं बची हैं। यानी यह बहुत जरूरी था कि वह खेत में जाने से पहले कुछ लकड़ियाँ काटकर लाए। पर उस दिन पहली बार ऐसा हुआ कि उसका कुछ करने को मन नहीं हुआ। उसे स्वयं पर आश्चर्य हुआ कि आज उसे हो क्या गया है, वह तो ऐसा आलसी कभी नहीं रहा कि काम पर न जाए? मगर उसका मन उस दिन बिलकुल राजी नहीं हुआ। अंततः उसने मछली पकड़ने का काँटा उठाया और झील की तरफ चल दिया। उसने अपने आप से कहा– 'चलो, कम–से–कम मछली ही पकड़ूँ!'

झील पर आकर उसने एक जगह काँटा पानी में डाला और एक बड़े पत्थर पर बैठ गया। तरह–तरह के विचार उसके दिमाग में आ–जा रहे थे, जैसे–पेट भरने लायक चावलों के लिए मुझे कितना श्रम करना पड़ता है जबकि मेरे कुछ मित्र बहुत कम परिश्रम करने के बावजूद बेहतर हाल में हैं। अपनी–अपनी किस्मत है, वगैरह, वगैरह।

'अरे ! क्या मैं कोई सपना देख रहा हूँ? काँटा इतनी जोर से क्यूँ हिल रहा है ? झील में क्या इतनी बड़ी मछली है ?' वह हैरान था और जब काँटा बाहर निकाला तो और भी हैरान हुआ। उसके काँटे में फँसी मछली आम मछलियों जैसी नहीं थी। उसकी त्वचा धूप में हीरों की तरह चमक रही थी। जब वह मछली को उठाने को आगे बढ़ा तो वह इंसानी आवाज में बोली, 'प्यारे किसान, मुझे पकाकर खाने के लिए घर मत ले जाओ। मुझे किसी ऐसे धान के खेत में छोड़ दो जिसमें पानी भरा हो और फिर कल दोपहर से पहले मुझे देखने आ जाना। यदि कल न आ सको तो भी कोई बात नहीं, अगले दिन आ जाना।'

हैरानी के मारे किसान से बोला भी नहीं जा रहा था। किसी तरह अटक–अटककर उसने पूछा, "तुम हो कौन?"

"इसकी फिक्र मत करो कि मैं कौन हूँ! कृप्या मेरा कहना मानो।"

"ठीक है," किसान ने कहा और उसे उठाकर पानी भरे धान के खेत की तलाश में चल दिया। दुर्भाग्य से ज्यादातर खेतों में पानी न के बराबर था। वह चलता गया, चलता गया और गाँव के लगभग आखिरी खेत तक पहुँच गया। इस खेत में एक जगह उसे पानी भरा गड्ढा नजर आया। अभी वह यह सोच ही रहा था कि यदि मछली को यहाँ डाल दूँ तो क्या वह जिंदा रह पाएगी, तभी मछली ने कहा, "प्यारे किसान, मैं जानती हूँ कि तुम क्या सोच रहे हो। मुझे इस पानी में छोड़ दो, लेकिन सुबह मुझे देखने आना मत भूलना।"

"मैं जरूर आऊँगा," किसान ने कहा और मछली को पानी में छोड़कर घर लौट आया। रास्ते भर वह उस विचित्र मछली के बारे में सोचता रहा। यहां तक कि रात भर वह सो भी नहीं सका।

अगले दिन वह बड़े सबेरे ही उठकर उस खेत की ओर चल पड़ा। उसे बड़ी उत्सुकता थी इसलिए वह लंबे–लंबे डग भरते हुए चल रहा था। अभी सूरज नहीं निकला था। मटमैला–सा अंधेरा था और सन्नाटा, जिसे पक्षियों के और जानवरों के स्वर बीच–बीच में भंग कर देते थे।

जब वह खेत के पास पहुँचा तो उसने देखा कि किनारे पर एक सुंदर महिला अकेली बैठी है। किसान को देखकर वह मुस्काई तो किसान डर गया। उसने भागना चाहा। उसे भागने का उपक्रम करते देख वह महिला बोली, "प्यारे किसान, भागो मत, डरो मत। मैं भूत नहीं हूँ, वही मछली हूँ जिसे तुम कल शाम यहाँ छोड़ गए थे। अब मैं मनुष्य के रूप में हूँ । मुझे घर ले चलो और अपनी पत्नी बना लो।"

"पत्नी! क्या तुम मेरी पत्नी बनकर रहोगी?" किसान ने थूक गटकते हुए पूछा।

"हां," उसने उत्तर दिया।

"क्या तुम उसे टूटे–फूटे झोंपड़े में रह सकोगी, जहाँ न तो..." किसान हैरान–परेशान था।

"कुछ मत कहो। मैं जानती हूँ कि तुम एक गरीब किसान हो।" वह किसान की बात काटते हुए बोली।

"ठीक है, यदि तुम सब जानती हो और फिर

भी एक गरीब व्यक्ति के साथ बसर करने को राजी हो, दुःख–तकलीफें बाँटने को राजी हो तो मेरे घर में, मेरे जीवन में तुम्हारा स्वागत है।'' किसान बोला।

''तुम्हें केवल एक बात का ध्यान रखना होगा, भूलकर भी किसी से न कहना कि मैं आई कहाँ से।'' औरत में बदल गई मछली बोली।

''इतनी–सी बात! निश्चिंत रहो, मैं कभी, किसी से नहीं कहूँगा।'' किसान ने उसे भरोसा दिलाया।

''किसी से भी न कहना, कभी भी नहीं,'' मछली ने दुहराया।

''हाँ, हाँ, नहीं कहूँगा।'' किसान ने मुस्कुराकर उसे आश्वस्त किया। किसान को लगा कि यह तो मामूली–सी बात है लेकिन किसी भी राज को पचा पाना कोई मामूली बात नहीं होती है।

सुबह जब पड़ोसियों ने देखा तो उन्हें आश्चर्य हुआ कि यह फटेहाल किसान ऐसी सुंदर पत्नी कहाँ से पा गया! लेकिन न किसी ने पूछा न उसने बताया कि वह कौन है, कहाँ से आई है। उसका परिवार कहाँ है। उनकी मुलाकात कैसे, कहाँ हुई। शादी कहाँ हुई।

वे दोनों सूखपूर्वक रहने लगे। दो वर्ष बाद उनके घर बेटा पैदा हुआ। वह भी अपनी माँ जैसा ही सुंदर था। उजला–उजला रंग, काले घुँघराले बाल, मछली जैसी गोल–गोल आँखें। जब वह खाना खाने लायक बड़ा हुआ तो मछली खाने का शौकीन निकला। उसे और कुछ न मिले बस एक छोटा–सा मछली का टुकड़ा मिले तो भी वह संतुष्ट हो जाता था।

अब भी किसान हमेशा की तरह ही खेतों में काम करता था। उसकी पत्नी उसके लिए खाना बनाती और स्वयं ही खेत पर लेकर जाती। एक दिन उसने अपने बेटे से कहा, ''बेटा, आज जरा देर हो गई है, मुझे बहुत से काम निपटाने हैं, ये खाना लेकर तुम जल्दी से अपने पिता के पास जाओ। वे प्रतीक्षा कर रहे होंगे और भूखे भी होंगे।''

बेटे ने खाने की टोकरी ली और चल दिया पर रास्ते में उसके साथी मिल गए और वह सब भूल–भालकर उनके साथ खेलने लग गया। वह कई घंटों तक खेलता रहा। जब उसे ध्यान आया तो उसने सोचा कि अब तो बहुत देर हो चुकी है,

फिर उसे भूख भी लग आई थी। सो, सारा खाना उसने खुद ही खा लिया। बाद में वह पिता के पास गया और उसने सारी बात उन्हें बताई। सुनकर पिता को बड़ा गुस्सा आया। उसने एक थप्पड़ उसकी कनपटी पर जड़ दिया और बोले, ''मछली की औलाद, शैतान लड़का, अब तू यहाँ क्या करना आया है? जा भाग यहाँ से।''

बेटा रोते–रोते घर लौटा तो माँ ने पूछा कि क्या हुआ? बेटे ने सारा किस्सा सुनाया और पूछा, ''पिताजी ने मुझे मछली की औलाद क्यों कहा? क्या यह सच है?''

''हाँ बेटा, ये सच है। मुझे अफसोस है कि तुम्हारे पिता ने राज खोल दिया। अब मैं कुछ नहीं कर सकती। तुम जल्दी करो, दौड़कर उस सामने वाली पहाड़ी तक पहुँचो और जितनी जल्दी उस पर चढ़ सकते हो चढ़ जाओ। मैं भी आती हूँ। अब जल्दी ही यह सारा क्षेत्र जलमग्न हो जाएगा । जल्दी करो, दौड़कर जाओ।'' उसकी माँ ने कहा।

बेटे के जाते ही माँ ने जितनी शक्ति से बजा सकती थी, उतनी शक्ति से ड्रम बजाना शुरू कर दिया। देखते–ही–देखते सारा आसमान काले बादलों से ढक गया । बादलों के गर्जन और बिजली की चमक ने लोगों में दहशत भर दी। तेज हवा ने बड़े–बड़े पेड़ उखाड़ डाले। मूसलाधार बारिश होने लगी। थोड़े ही समय में सारे क्षेत्र में एक–एक मीटर पानी भर गया।

लोग घबरा रहे थे। चीख–पुकार मच गई थी। सुरक्षित क्षेत्र की तलाश में लोग बदहवास भाग रहे थे। जो लोग ऊँची जगहों पर पहुँच सके वे बच गए, शेष बाढ़ की भेंट चढ़ गए। कितने ही मवेशी मारे गए।

कुछ दिनों बाद बाढ़ का पानी उतर गया लेकिन जहाँ किसान की झोंपड़ी थी, वहाँ पानी भरा रहा, बल्कि उसका स्तर लगातार बढ़ता ही गया। अंततः उसने एक झील की शक्ल अख्तियार कर ली। बाद में इस झील का नाम पड़ा–तोबा झील।

इस झील के पास के निवासियों का मानना है कि वह मछली, जो औरत बनकर गाँव में रही थी, अब भी इसी झील में रहती है और जब वहाँ कोई नहीं होता तब वह सतह पर भी आती है।

(नेशनल बुक ट्रस्ट.की पुस्तक *'नैने–चूचू'* से)

A Native American Folktale

The Mouse and The Buffalo

Usha Iyengar

Illustration: Bagmi Raghav

Mouse wanted to store food before winter set in. One morning, with the sunrise he came out of his hole. He saw a Buffalo grazing not far from his hole. As a matter of fact, he knew that soon a herd of buffaloes would follow this one buffalo and the entire field will be grazed. Poor Mouse would become an easy prey of some big bird or wild animal. One way or the other, Mouse had to get rid of this Buffalo. He went to Buffalo and said in a squeaky voice, "Mr Buffalo! Are you ready to fight with me?"

Buffalo saw the Mouse but did not reply. He kept grazing. Mouse challenged him again, "Well! Are you ready to fight with me?"Buffalo responded, "My friend! Be quiet. I don't intend to fight with you. I can crush you with my hoof."

Mouse proudly said, "You cannot harm me. You can only talk and nothing more." By now Buffalo was very angry. He shot back, "Listen my friend Mouse, be quiet. Don't disturb me or annoy me."

Mouse retorted boldly, "Let's see your capability." Buffalo fumed with anger and charged at Mouse. He fiercely trampled the grass around him. When he cooled off, he looked around for Mouse, but did not find him anywhere. Buffalo sighed and said, "I had warned him that I will crush him and finish him off. He thinks too much of himself."

Just then Buffalo felt a slight pain in his right ear. He twitched his ear and jerked his head from side to side and ran around. Mouse kept nibbling and scratching Buffalo's ear from inside. Buffalo suddenly stood still. At once Mouse came out of his ear and said, "Now, do you accept my strength?"

Buffalo retorted in anger, "Never. You are a miniscule, a small mouse". He rushed towards Mouse and one again trampled the grass. Not finding Mouse he thought him to be dead. Suddenly he felt pain in his left ear, the pain was unbearable. Moaning, he fell on to the ground and was dead. Mouse jumped out of the Buffalo's ear and stood on the Buffalo and shouted, "I killed the Buffalo and I am the Chief." He was very happy. He looked around proudly but there was no one to see him. He cried out in a loud voice, "Please, somebody get me a knife. I have to carve my hunt into small pieces."

Nearby a fox was looking for something to eat. Mouse's scream alerted her. She ran and hid behind a bush. Then out of curiosity she went in the direction of the voice. She stood on a big boulder and looked around, but couldn't see anything. As she turned to go back, she heard the same voice, "Bring a knife, quick."

Fox ran towards the Buffalo. There she saw a mouse standing on the Buffalo. Seeing the Fox, Mouse enquired, "Can you carve this Buffalo meat into small pieces? In exchange I will give you some meat pieces."

Fox salivated seeing and hearing 'meat' and was ready to do the work. She right away started to carve the meat into small pieces. Mouse was around supervising Fox. When the work was over, Mouse gave Fox a big piece of meat. Fox ate the meat hungrily and then she said, "Sir, I am still hungry, May I have another piece?"

Mouse replied, "You are a glutton as well as greedy. I did give you a large piece." He handed her another piece of meat and said, "Here you can have this one." Fox relished the second piece of meat and then said, "My small cubs have not eaten for few days, they are hungry."

Mouse gave Fox all four legs of Buffalo and said, "Alright, take these legs, it should be sufficient for them." Fox was satisfied and thanked Mouse. Then she hesitatingly said, "My husband has not eaten for few days. He is hungry. It would be nice to get some meat for him."

Mouse was disgusted with Fox's demands. He muttered to himself and reluctantly gave Buffalo's head to Fox. Fox lunged towards Mouse to grab the head. Mouse out of fear ran for shelter and hid in his hole. Fox got the entire Buffalo for herself and she relished it thoroughly.

(From the NBT Publication *'Native American Folktales'*)

A Folktale from India

Above the Clouds

Anvita Abbi

Illustration: Partha Sengupta

In ancient times there lived a man named Phertajido. It is believed by the Andamanese that Phertajido was the first man who lived on the Andaman Islands. In Andamanese language Phertajido means 'born out of bamboo'. So, it was generally believed that Phertajido originated from the hollow of a bamboo. He roamed here and there in search of food for survival and lived alone. He spent most of his time making bows and arrows. One day, Phertajido shot his arrows here, there and in all directions. Next morning, he went to search for the shot arrows.

While searching for the arrows, he found one in a spring and drank water from it. This is how he discovered the source of water.

As he searched for other arrows, he found one hidden in the roots of a potato plant. This is how he discovered the potato and took some with him. He continued his search and found one in the heap of incense or dhoop. So, he took a bit of the dhoop along with him. Phertajido went further to look for more of the shot arrows, this time he found a very fine soil of Kot. He took some of this also.

Out of the soil, he made pots. He kept them for drying. When the pots were dry they became hard. Then he placed some potatoes in the pot and boiled them on fire. He enjoyed the meal of boiled potatoes. While eating potatoes, an idea struck him. Why not carve a sculpture from the remaining Kot!

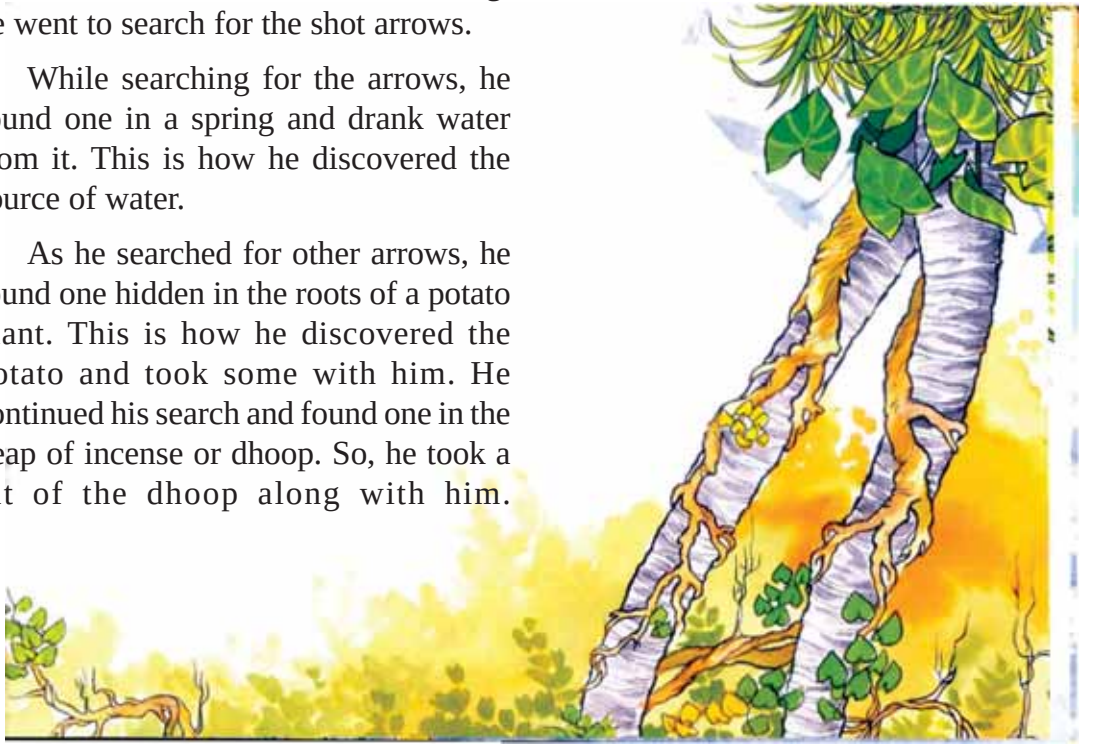

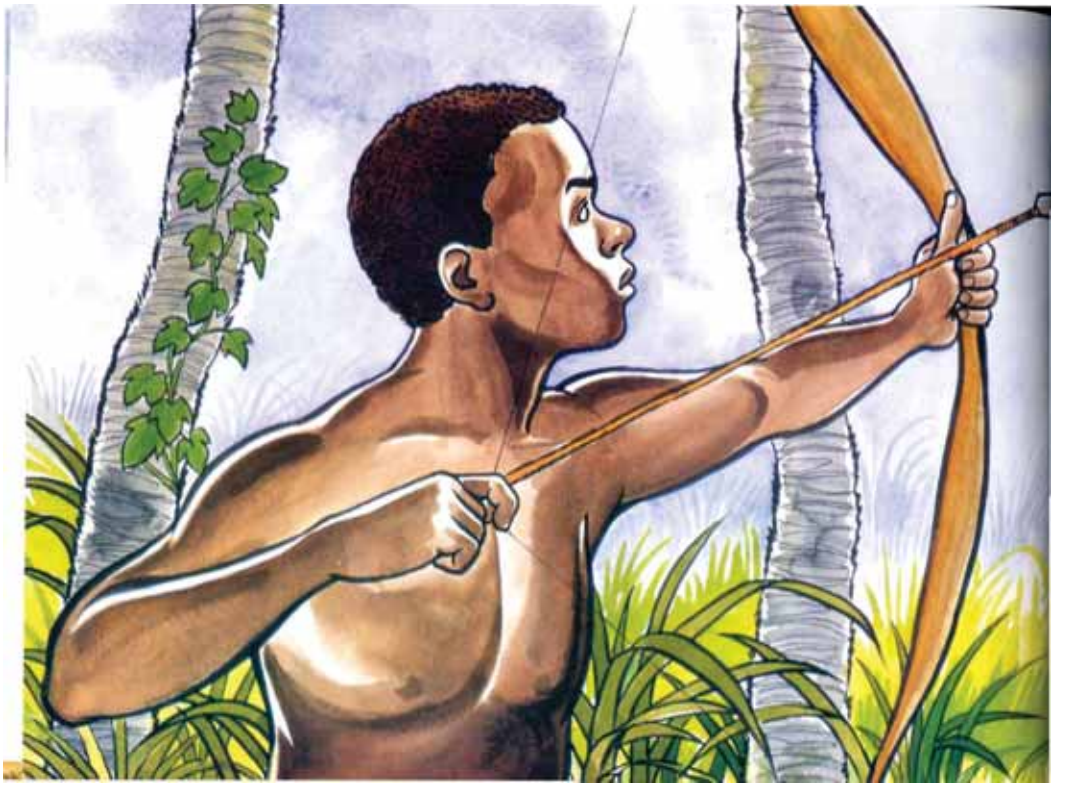

He wasted no time and in a few days made a human like dummy out of the Kot soil. Phertajido placed this dummy on a raised platform and burnt some fire under it so as to dry it well. Thereafter, he resumed his bow making.

Every now and then he would look at the dummy on the platform while engaged in making bows and arrows. He ensured that the Kot did not fall down. He was immensely satisfied with his work. Occasionally, he would get up put some more wood into the fire and resume with bow peeling job. After some time, he looked back again.

Surprise! Surprise! The platform shook as the female figure of Kot turned her side. Phertajido was overwhelmed. He stood up again to kindle the fire and complete the job of drying the figure. Tired of making bows, he decided to go to the jungle for hunting. He left the Kot on the platform for it to be dried completely. He found game and proceeded home with it.

As he approached home, he glanced at the platform from a distance. The platform was empty! He was shocked and felt dejected.

Putting down the hunt, he sighed,

"Where did Kot disappear?" Gripped with a sad feeling he sat down with a heavy heart. He wondered as to where she could disappear. Lady Kot was inside the house but Phertajido was oblivious of the fact. Kot saw Phertajido from inside the house and started laughing.

She laughed and laughed until she got tired of it. Surprised at the sound, Phertajido looked back. He saw Kot sitting inside the house laughing merrily.

Phertajido ran to her. He embraced Kot and started crying out of sheer joy. After that, both of them started living together as husband and wife. They had many children. Their children married among themselves and thus their clan increased by leaps and bounds.

Phertajido once asked his wife Kot to make a rope. He went to bring a pharako or creeper found in the jungle which was good for making ropes. He asked his wife to peel the creeper and make a rope of it. His wife followed his advice and made a very long rope. It was so long that it coiled in the shape of a heap.

Phertajido tied a stone at the head of the rope. He swirled and swirled the rope several times and finally threw it up in the sky. As he pulled back the rope, he found that it was entangled somewhere and would not come down.

Phertajido twisted the rope to make it harder. The rope tightened and stiffened. He tugged at it, but the rope would not move. He knew that the rope was stuck somewhere. He went to call Kot. He said to her, "I will go up above the clouds to see the place above us. I will find out how the place looks like. I will go there tomorrow." Next day he climbed up above the clouds. He reached the place and was surprised to find many people like himself. Phertajido came back to the earth and told his wife about this. He told her that the place above them was nice and there were many people like the Andamanese over there. He suggested that both of them should go there. Kot did not like his suggestion. She said, "How can we leave our children's place?" Phertajido said, "We will inform our children and then go."

He gathered all the members of his family at one place. Phertajido tried to convince them. He said, "My dear children, please keep silence for a while. Your father and mother are speaking to you. We have decided to leave this earth. We will go up above the clouds. You should live your life well here. Our time is over. Now we depart."

Thus saying, they went up above the clouds through the rope. Once they reached the top, they cut the rope from above.

(From the NBT publication
'An Ancient Tale from Andaman')

Tarzan

Choisang Tamang

Once there lived a girl named Pooja with grandmother, grandfather and her father. She had lost her mother at the age of fourteen.

One day Pooja and her friends went to attend a camp in the forest which was to last for a week. After two hours they were in the dense forest, and feeling very hungry. So they decided to eat something. It was very dark and they had become very tired after the long journey. So, they decided to go to sleep. They erected the tent and went to sleep. But suddenly, they heard a strange voice.

Everybody got curious to know what it was. The grass had begun to move. They thought that it was due to wind that was blowing heavily and so went to sleep again. But, after a while, they again heard the same sound. This time they got frightened. Suddenly a big tiger appeared from no where.

Pooja and her friends began to run. They ran as fast as they could. While others could manage to move to safer places, Pooja was chased by the tiger. As the tiger was very close to her and was about to pounce on her, all of a sudden a boy came charging on the rope and saved the girl's life. The boy told her that his name was Tarzan.

The Princess and the Swans

Anju Minz

Long, long ago there was a kingdom in the South Asia where lived many people. But the King and the Queen were not happy. It was because the King wanted a daughter in his family; instead they had two sons. A few years passed and the queen gave birth to a beautiful daughter. The king was elated. But his happiness did not last long as the queen passed away soon after.

The king thought that the new-born baby desperately needs a caring mother and so he decided to marry a widow who had two daughters born of her first marriage. This lady was not kind-hearted. She also used to practice black magic about which the king had no information.

One day when the two brothers and the princess were playing in the garden, the step mother saw them and said to herself, 'if I would change these children into swans, then the king will love my daughters only. That night when they were in the dining room, the queen mixed some powder in the food the children were supposed to eat. As she was about to feed them with her own hand, it slipped out of her hand and fell on the floor. She however made the brothers eat the food. The brothers obliged by eating a little only.

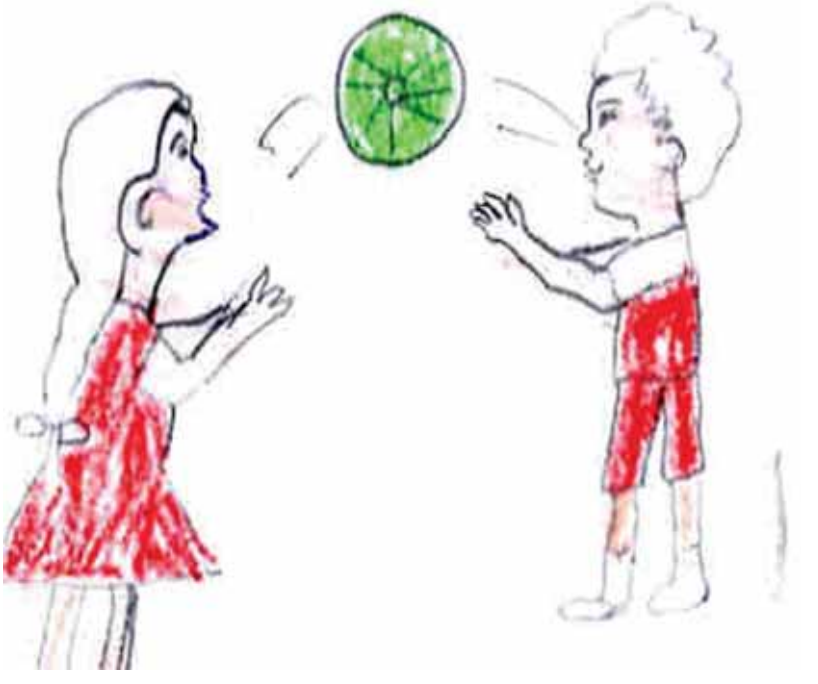

When the brothers fell asleep, their hands suddenly changed into the swan-wings. In the morning when brothers awoke from their sleep, they had lost their hands;

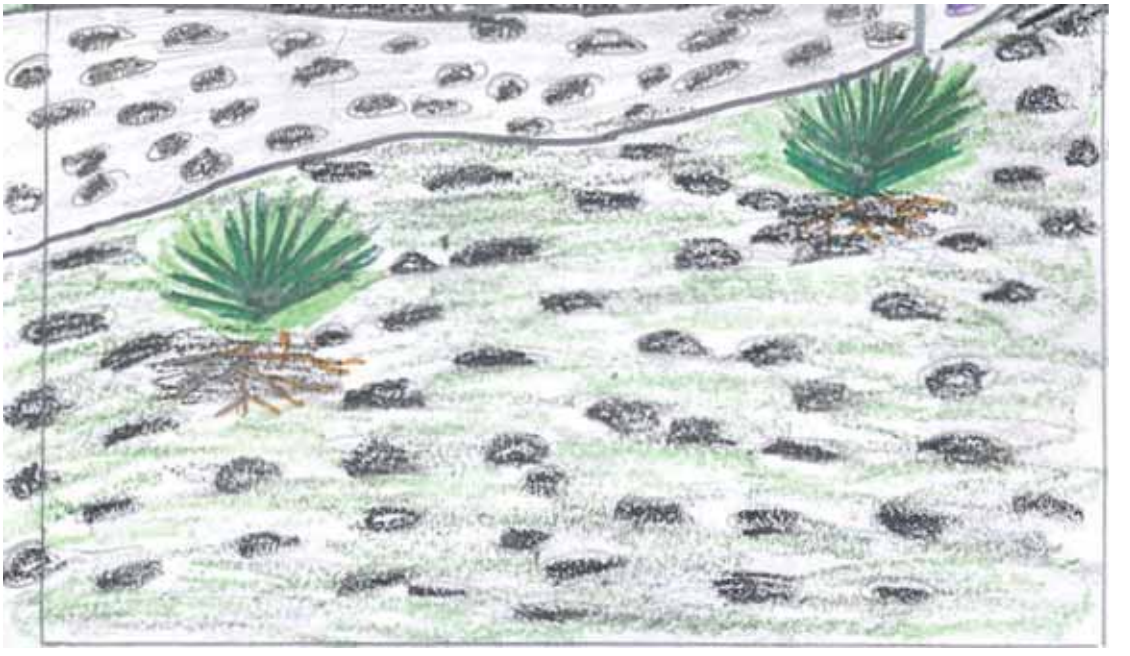

instead they had developed wings. The two brothers thought that since they had turned into swans, they should better not stay there. But the eldest brother thought that they must meet their sister before they departed.

The brothers went to their sister. The eldest brother told the sister that she had to take care of the kingdom as well as the family. “No, I may not be able to manage this vast kingdom alone, I will go with you all,” said their sister. But when her brothers told her to be there only, she decided to look into the circumstances under which her dear brothers had changed into swans. The young sister soon realized that this must be the handiwork of her step mother. She had seen her mixing something in the food.

The young sister immediately rushed to the king and told her everything. The king immediately called the court priest and sought to know the truth from him. The court priest announced that the new queen practices black magic.

The king summoned his wife to the court and ordered her to turn the swans into children once again or else he would get her killed. The queen, who was by then repenting for what she had done as her daughters loved their step-brothers, wielded her magic wand.

The swans came into their original form and thus everyone was happy once again.

महल का भूत

नामग्याल दोरजी

सन् 1937 की बात है। मेरे दादाजी सिक्किम के राजा तेनजिंग नामग्याल के यहाँ घोड़ों को ट्रेंड करने का काम करते थे। वह राजा के लिए सेमियोज घोड़े को ट्रेंड करते। मेरे पिताजी स्कूल में पढ़ते थे, स्कूल की छुट्टी रविवार को होती थी। रविवार को दूसरे राज्य के लोग हमारे राजा–रानी से मिलने आते। सेमियोज इधर–उधर घूमता जब राजा महल से बाहर होते।

1 अप्रैल 1937 की बात है। रात को बहुत तूफान आया। जब भी रात होती कुछ–न–कुछ अजीब–सी आवाजें आतीं। जब हम सोने जा रहे थे इसी तरह की आवाजें महल से आने लगीं। हम राजा–रानी के साथ देखने के लिए बाहर निकले तो देखा, नौकर की लाश जमीन पर पड़ी है और

खून से कुछ लिखा है।

खून से लिखा था – 5 अप्रैल 1937 को इस जगह पर भूत सिक्किम के राजा–रानी को मार देगा। राजा–रानी ने जब यह पढ़ा तो वे डर गए। उन्होंने मेरे दादाजी को पादरी को लाने के लिए कहा। कुछ घंटों बाद मेरे दादाजी पादरी को लेकर आए। पादरी को उस भूत के बारे में बताया जा रहा था तभी कमरे में अंधेरा हो गया। खिड़की बंद हो गई, लेकिन कुछ देर बाद फिर खुल गई।

कुछ देर बाद पादरी ने बताया कि भूत और कोई नहीं, राजा का चचेरा भाई पहुरबा नामग्याल है। वह नहीं चाहता था कि कोई भी राजा बने। राजा ने यह सुना तो डर गया और कुछ देर के लिए मूर्तिवत बना रहा।

मेरे पिताजी ने पादरी से पूछा, इस भूत का क्या करें? पादरी ने कहा कि वह एक शक्तिशाली गोला बनाएगा, जिससे भूत बंध जाएगा। पादरी ने कुछ सामान मँगवाया। बारिश बहुत तेज हो रही थी। सब लोग अपने राजा के बारे में सोच रहे थे। सामान लाने पर पादरी ने एक गोला बनाया, लौंग से, और मंत्र पढ़ना शुरू किया। लेकिन भूत उस गोले में नहीं आया। मेरे पिताजी गोले में चले गए और भूत के लिए रोने लगे। कुछ देर बाद भूत आ गया। पिताजी जल्दी से उस घेरे से बाहर आ गए। भूत उस घेरे से बाहर नहीं आ सका और वहीं रह गया।

कहानी पांडा की

अदित अनेजर

एक समय की बात है। सिक्किम के राजा ने राज्य का पशु कौन होगा, इस हेतु विशेष एलान किया। सारे पशुओं को बुलाया गया। पांडा परिवार के नेता मिस्टर पांडीज्यान को मंगन जंगल से गंगटोक बुलाया गया। अंततः मि. पांडीज्यान का परिवार ही सिक्किम का राज्य पशु चुना गया।

पांडा बहुत खुश हुआ कि अब उसकी जिंदगी विलासिता से बगीचे में बीतेगी। उसे अच्छा खाना आदि मिलेगा, लेकिन पांडा अपने मित्रों को भूल गया। क्योंकि वह अब राज्य पशु था। उसे बगीचे से सिक्किम के राजा के चिड़ियाघर यानी जू में लाया गया। उसने सोचा कि यहाँ पर ढेर सारी मौज–मस्ती होगी, लेकिन जू में जाने पर पता चला कि यहाँ पर देखभाल के लिए सही लोग नहीं थे। जू में ढेर सारे पांडा पिंजड़े में बंद थे। वे स्वतंत्रतापूर्वक इधर–उधर घूम भी नहीं सकते थे। पांडा अपने परिवार और मित्रों के बारे में सोचने लगा। उसे उस जंगल की याद आने लगी जहाँ वह स्वतंत्रतापूर्वक विचरण करता था, मौज–मस्ती करता था। सोच–सोचकर वह दुखी हो गया।

एक रात पांडीज्यान पर एक चीते ने हमला कर उसे मौत के मुँह तक पहुँचा दिया, लेकिन उसे मित्रों ने बचा लिया और उसे पिंजड़े से भागने में भी मदद की। पांडीज्यान भागकर अपने घर मंगन के जंगल में पहुँच गया। उसने महसूस किया कि बड़े बन जाने पर परिवार, संबंधियों और मित्रों को नहीं भूलना चाहिए। अब जंगल में वह, पिंजड़े से मुक्त होकर, अपनों के बीच आराम से घूम–फिर रहा है और यहाँ किसी प्रकार का खतरा भी नहीं है।

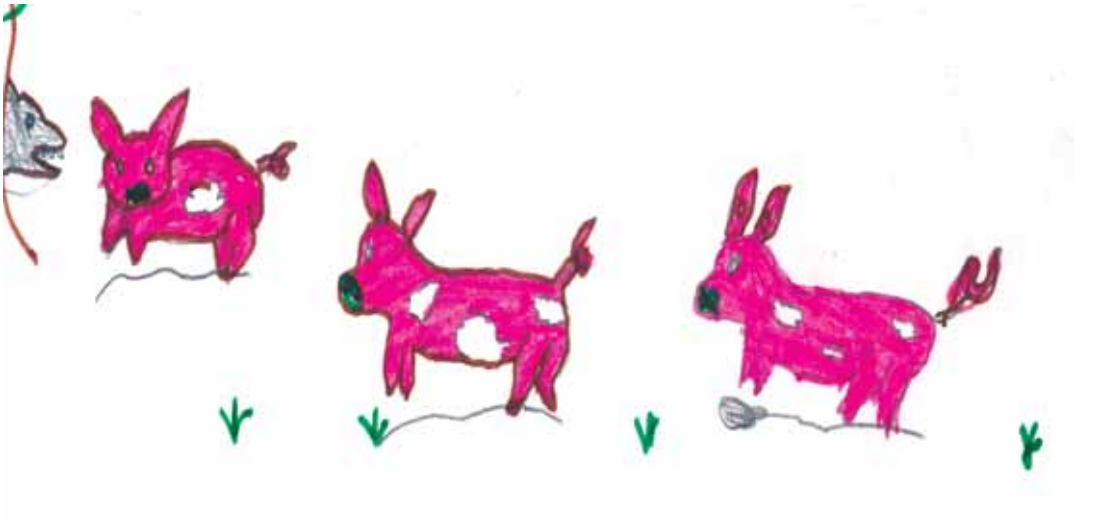

Die for Metal

Saheeb Ansari

They can't stop but let them try
For heavy metal we will die

Quit my job this morning
Sat forever, I would hold
My head up high
I need metal in my life
Just like an eagle needs to fly

So I walked outside
the street
From there I hear
thunder and scream
And in that scary moment

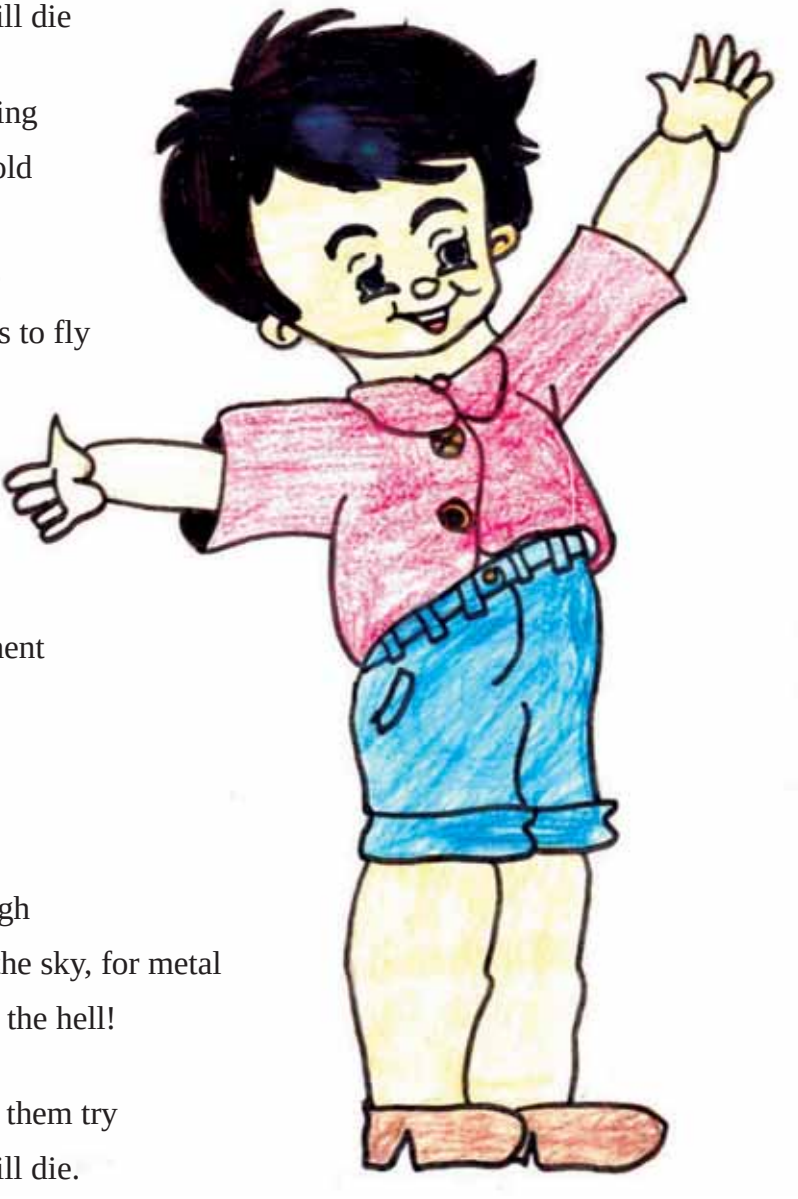

I had words
To say a few
And I said:
"Hold your head up high
We should look up in the sky, for metal
Out of the hell! Out of the hell!

They can't stop but let them try
For heavy metal we will die.

Book Review

This is an unusual tale which is actually a creation story which explains how the Mongoose and Snake became enemies.

Ramendra Kumar is an award winning Indian writer for children with 15 books in English. Ramendra's works have been translated into several Indian and foreign languages.

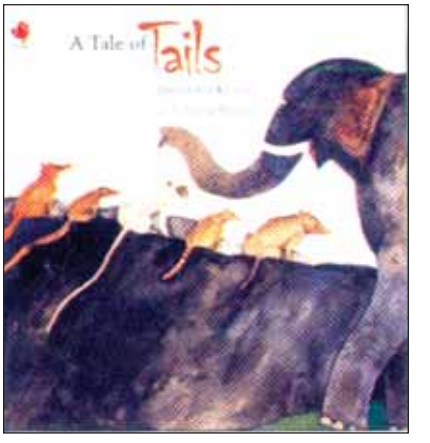

A Tale of Tails
Ramendra Kumar
National Book Trust, India
Rs. 45/-

Ambili was just four days old when it began to rain heavily. Cold drops of water fell sharply on her and water flowed down her cheeks. She hid herself under her mother's tummy. An elephant baby and scared of the rains! Read all about how she learnt to love the rain.

Anita Vachharjani enjoys writing children's books and reading them too.

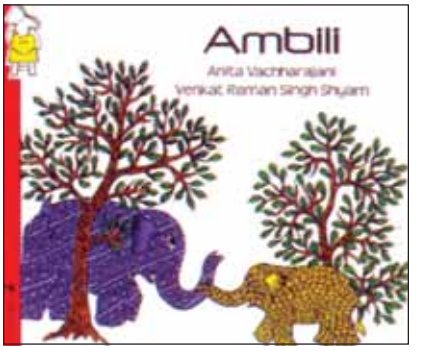

Ambili
Anita Vachharajani
Pratham Books
Rs. 35/-

R.N.I. No. -64771/96 Postal Regd. No-DL-SW-1-4066/2012-14
Licenced to post without prepayment, L. No. U (SW) 24/2012-14 Mailing Date :. 20/21 Same Month
Date of Publication:14/04/2013